प्रमिला भंडारी
प्रधानाध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय, उत्यासू,
ग्राम सभा– जवाड़ी, विकासखण्ड– जखोली,
जनपद– रुद्रप्रयाग

शिक्षक जो समाज को पहचान दिलाते हैं

सहायक अध्यापक – शिखा रावत
सी.आर.सी.सी. – जे.एस. बुटोला
भोजन माता – विमला देवी, सरोजनी देवी
नामांकन – 33

वर्ष 1997 में जनपद चमोली से अलग हुए जनपद रुद्रप्रयाग की प्रमुख पहचान बना केदारनाथ। 2013 में केदार घाटी में आई विनाशकारी आपदा ने इस जनपद की छवि को देश–दुनिया में धूमिल कर दिया। रुद्रप्रयाग की छवि के साथ कालिदास, चंद्रकुंवर बर्त्वाल, नारद और शंकराचार्य माधवाश्रम को भी जोड़ा जा सकता है। कालिदास के बारे में यह धारणा है कि हिमालय का जो वर्णन उन्होंने अपने काव्य में किया है, वह यहां रहे बगैर संभव नहीं। वे या तो यहीं के थे या यहां लंबे प्रवास पर रहे। कविवर चंद्रकुंवर बर्त्वाल बाद के वर्षों में अपने गांव आकर रहने लगे। उनकी विलक्षण प्रतिभा के कारण उन्हें 'भारत का कीट्स' भी कहा जाता है। मिथकों में नारद का रुद्रप्रयाग से संबंध बताया गया है।

जनपद मुख्यालय में हिमालय से बहकर आने वाली मंदाकिनी और अलकनंदा जैसी बर्फानी नदियों का संगम है। यह पंचप्रयागों में से एक प्रयाग है। और क्या हो सकती है रुद्रप्रयाग की पहचान? कुछ लोगों से बात करता हूं तो वे बताते हैं तुंगनाथ को पांचवे धाम की मान्यता है। कुछ और मंदिरों के नाम वे बताते हैं। कुछ और बात करने पर पता चलता है रुद्रप्रयाग का ऊंचाई वाला क्षेत्र बधानी ताल और देवरियाताल जैसी सुन्दर झीलों और दर्जनों चित्ताकर्षक बुग्यालों से आच्छादित है। चोप्ता,

दुगलबिट्टा, बनियाखाल, मदमहेश्वर जैसे क्षेत्र आकर्षक कैम्पिंग साइट हैं।

प्रकृतिविदों के लिए रुद्रप्रयाग जैसा हिमालयी क्षेत्र इस लिहाज से अहम् हो सकता है कि यहां घाटियों में भावर–तराई में पायी जाने वाली वनस्पतियां मिल जाती हैं और थोड़ा ऊपर बढ़ जाओ तो तीन तरह के बुरांश, बांज की चार–पांच प्रजातियां, मोनाल पक्षी और बिना पूंछ का चूहा दौड़ता मिल जाता है। यदा–कदा बारहसिंघा भी देखे जा सकते हैं। कुछ पढ़े–लिखे लोग जिम कॉर्बेट का जिक्र करते हैं, जिन्होंने यहां 125 लोगों की जान लेने वाले आदमखोर गुलदार को ढेर किया था। 'दि मैन ईटिंग लैपर्ड ऑफ रुद्रप्रयाग' पुस्तक में कॉर्बेट ने इस घटना का विस्तार से जिक्र किया है।

मैं सोचता हूं, तीर्थाटन, पर्यटन और वन्यता के मध्य रुद्रप्रयाग के लोगों की पहचान कहां है? वह कहां है जो रुद्रप्रयाग में रोज होता है। जो यहां के जीवन का हिस्सा है। जैसे महिलाओं का चारा–पत्ती की तलाश में निकलना, जैसे सड़क–मजदूरों का भू–स्खलन से धंसी दीवारों को फिर से उठा देना, टैक्सी वाले का सवारियों की तलाश करना, लद्दू घोड़ों का बिना शिकायत किये भागते जाना या किसी बच्चे का स्कूल की पगडंडियां चढ़ना–उतरना।

मुझे इस बात का तीव्र अहसास होता है कि किसी जगह की 'पहचान'

सत्ता–सोपानों में अवगुंठित है। हमें आदत हो जाती है खुद को मुख्यधारा से जोड़कर देखने की। जैसे रुद्रप्रयाग में बहुत सारे लोग इस बात से खुश हैं कि यहां रेल लाइन बिछने वाली है और रेल आ जाने से वह पिछड़े नहीं रह जायेंगे।

हमारी भेंट यहां ऐसी शिक्षिका प्रमिला भंडारी से होती है जो इस जगह को पिछड़ा नहीं मानतीं। यहां रहने में उन्हें परेशानी नहीं होती बल्कि गर्व होता है। दरअसल वह यहां की होने को सही जगह होना मानती हैं।

प्राइमरी स्कूल उत्यासू की प्रधानाध्यापिका प्रमिला भंडारी का परिचय हमें स्थानीय महिलाओं, शिक्षक साथियों और शिक्षा अधिकारियों से मिलता है। सब उनके मुरीद हैं। मुरीद होने की सबकी अपनी–अपनी वजहें हैं। जैसे महिलाओं को वो इसलिए पसंद हैं क्योंकि उन्होंने ही पहली बार गांव के पुरुषों में बढ़ रही नशे की लत के खिलाफ पुलिस थाने में जाकर शिकायत करने की प्रेरणा दी। पुरुषों को उन्होंने यह भी कहा कि 'आखिर आप बाजार आते–जाते हुए राशन–पानी तो उठा ला सकते हो। महिलाएं ही क्यों हर तरह का बोझ उठाएं' शिक्षक साथी बताते हैं कि वह तो हमारी आदर्श हैं। शिक्षा अधिकारियों को मैडम की प्रतिबद्धता और विनम्रता पसंद है।

जब हम उनके स्कूल पहुंचते हैं तो प्रातःकालीन सभा में बच्चों द्वारा गायी जा रही मधुर स्वर–लहरियां कानों तक आती हैं। ये प्रार्थनाएं महज ईश्वर की वंदना भर नहीं हैं, इनमें जीवन को बेहतर बनाने, सुंदर बनाने और कल्याणकारी बनाने की बातें हैं। बच्चे इन गीतों के स्पंदन से आंदोलित हैं।

प्रार्थनाओं के बाद बारी है कॉमन क्लास की। यह क्या है? यहां सवालों के जरिये कुछ रोचक बातें हो रही हैं। जैसे नदी की बातें, पहाड़ की बातें, मोनाल, कोदा–झंगोरे की बातें और गांव के मशहूर किस्से। थोड़ी–थोड़ी बात देश–दुनिया की भी। जैसे अमेरिका का राष्ट्रपति चुनाव। जैसे सीमा पर मारे गए जवान और देशों के बीच युद्ध की बातें। यह बाल–मन में कौतूहल जगाने के लिए अच्छा प्रयास है।

हमारी नजर अब स्कूल की बाहरी–भीतरी दीवारों पर जाती है। सारी दीवारों में कुछ न कुछ है। कहीं ब्रह्मकमल का पुष्प है तो कहीं गांव का

नजरी–नक्शा। बहुत सारे शब्द और वर्ण। एक जगह स्कूल द्वारा जीते गए इनाम तो एक जगह बहुत सारी किताबें सजी–धजी बैठी हैं। ये कैसी किताबें हैं भला? इनमें कक्षा–दो और पांच तो कहीं नहीं लिखा है। ये बच्चों की वो किताबें हैं जो वे शौक से पढ़ते हैं। कहानियों की किताबें, कविताओं की किताबें, चित्रों की किताबें। अहसासों और उमंगों की किताबें। यहां बच्चों की बॉक्स फाइलें रखी हैं। सबकी अलग–अलग फाइलें हैं। स्कूल के सभी बच्चों की फाइलें एक साथ हों तो उनके मन के भीतर झांकने का यह अच्छा अवसर है। हिंदी–गणित की कॉपी और मन की कॉपी में तो अंतर होता है न! किसी ने अपनी पसंदीदा कविताएं यहां चिपकाई हैं तो किसी ने भांति–भांति की पत्तियां जो जिल्द से दबकर और भी खूबसूरत हो गयी हैं। किसी ने दुनिया–भर का ज्ञान यहां रखा है। यानि इस स्कूल में बच्चों के लिए ऐसा स्कोप है कि अपनी मन की भी कुछ कर सकें। लाइब्रेरी रजिस्टर के मुताबिक स्कूल में 884 किताबें हैं। बाद में बच्चों ने बताया वे हर शनिवार को अपनी पसंद की किताब चुनकर पढ़ते हैं। फिर उनमें कहानियां सुनाने की होड़ लग गयी।

पास के गांव की रहने वाली सहायक अध्यापिका शिखा बताती हैं कि प्रमिला जी को नए–नए प्रयोग करने में आनन्द आता है। यह आनन्द लेने का रोग अब मुझे भी लग गया है। मैम तो कुछ न कुछ करती रहती हैं, मैं भी कुछ न कुछ नया करने की सोचती रहती हूं। भोजन माता हमारी बातचीत सुनकर मुस्कराते हुए आगे बढ़ती हैं, शायद उन्हें भी कुछ कहना था। वह हेड मैम के आगे से गुजरीं तब भी मुस्करा ही रही थी, तो इसका मतलब हुआ यहां मुस्कराया जा सकता है। झेंप नहीं है, डर नहीं है, झिझक नहीं है। जहां मुस्कराने की इजाजत होती है, वहां बोलने और सवाल करने के लिए जगह बनती है। बच्चे कतार से अपनी कक्षाओं की ओर बढ़ते हैं, सब के सब मुस्कराते हुए। मुस्कराहटों की कतार लग जाती है।

'क्या बात मैम यहां के बच्चे मुस्कराते बहुत हैं, कोई डर नहीं है? ऐसे में अनुशासन ठीक रहता है? कैसे सम्भालती हैं आप ऐसे बच्चों को?' मैं, मेरी तरफ आती प्रमिला मैम से सवाल करता हूं। वो भी मुस्करा देती हैं।

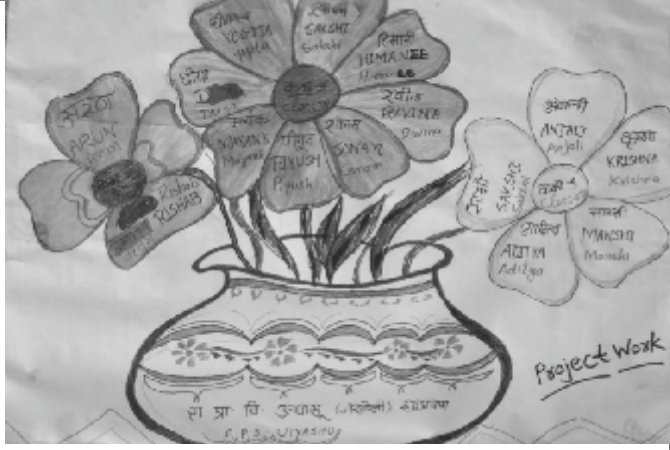

वह बताती हैं 'आपने एकदम सही चीज पकड़ी. सच बताऊं बच्चों की यही मुस्कान मेरी उपलब्धि है। जिस दिन एक भी बच्चा मुस्कराना छोड़ देगा, मैं समझूंगी एक शिक्षक के रूप में मैं फेल हो गयी हूँ।' आगे जोड़ती हैं "मुझे लगता है मुस्कराना और खिलना–खिलाना पहली चीज है जो हम अध्यापकों को करनी चाहिए। पढ़ना–पढ़ाना तो होता रहता है। लेकिन, बच्चे की आत्म–संतुष्टि और सहमति बहुत आवश्यक है, इससे पहले कि हम उसे कुछ बताएं और करने के लिए कहें।"

वे बताती हैं, "यह सरल काम नहीं है। बच्चे केवल स्कूल नहीं आते, बच्चों के साथ उनके घर, परिवार और समाज भी स्कूल आते हैं। हमारे यहां 17 बच्चियां हैं। दो बच्चे अनुसूचित जाति के हैं। इन बच्चों को घर–समाज की परिस्थितियां प्रभावित करती हैं। उसका प्रभाव स्कूल पर भी आता है। फिर भी हमारी कोशिश होती है, कम से कम स्कूल की बाउंड्री के भीतर कि वह मुरझायें नहीं। हो सके तो वह घर जाकर भी हंसते–खेलते रहें।

'बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि किस तरह की है?

"किसी के पिता दुकानों में काम करते हैं, कोई मनरेगा वगैरह का काम। पारिवारिक पृष्ठभूमि का फर्क पड़ता है। लेकिन हम कोशिश करते हैं कि जितना संभव हो अभिभावक बच्चों की शिक्षा में रुचि लें, जितना भी उनसे हो पड़े। बच्चों की शिक्षा को गंभीरता से लें। शिक्षा ही वह उपाय है जो उन्हें बदतरी से बेहतरी की ओर ला सकता है।"

मैं अचानक विषयांतर करते हुए पूछ लेता हूं, स्कूल में लहलाती फुलवारी का राज। स्कूल के पास अभी अपनी बाउंड्री वॉल नहीं है, लेकिन फुलवारी का हर फूल हिफाजत से है। तब वे बताती हैं कि इसके लिए माहौल बनाया

गया। बच्चों में स्व–अनुशासन की भावना पैदा की गयी। जब कोई बाहर का व्यक्ति फूल तोड़ने आता है तो बच्चे उन्हें रोक लेते हैं। वे कहते हैं यह हमारे स्कूल का फूल है। हमारे स्कूल को सुंदर बनाने के लिए। कृपया आप इसे न तोड़ें। उसी अनुशासन में वे अपनी कॉपी–किताब भी संभालकर रखते हैं, बल्कि कहना चाहिए सजाकर रखते हैं।

प्रमिला जी का पैतृक आवास श्रीनगर में है और परिवार देहरादून जाकर बस गया है। उनका बेटा नेवी में अफसर है और बेटी डिजाईनर। पति बैंक में अधिकारी, जो हाल में रिटायर हुए हैं। वे यहीं गांव में ही कमरा लेकर रहती हैं। उन्होंने अपनी सर्विस में मात्र एक बार मेडिकल लिया और उनकी साल की अधिकांश छुट्टियां बची रह जाती हैं। प्रमिला जी पहले श्रीनगर के एक प्राइवेट स्कूल में सात साल पढ़ा चुकी हैं। सरकारी नौकरी में 1995 में पहली पोस्टिंग पास के ही चाका प्राथमिक विद्यालय में हुई थी, यह उनका तीसरा स्कूल है। वह यहां 2001 से हैं। प्रधानाध्यापिक के रूप में यह उनका सातवां साल है।

ऐसा क्या खास है इस काम में कि घर परिवार से दूर रह रही हैं ?

"हां, अब लोग श्रीनगर जैसी जगह से ही आते–जाते हैं। लोगों के पास कारें हैं और वो ऐसा करते हैं। यदि इससे वे अपना काम करने में सफल हो जाते हैं, तो उसमें बुराई भी नहीं। लेकिन मुझे यहां गांव में रहना, गांव वालों के बीच उठना–बैठना यही अच्छा लगता है। मैं पास के कस्बे में रहती हूं, वह भी एक गांव ही है। गांव का समाज जीवित समाज होता है। यहां रिश्ते बनते हैं। गांव में रहने से बच्चों की स्थितियां भी समझ में आती हैं। यहां के लोग कोई गैर तो नहीं, अपने ही हैं। हम लोगों के पुरखे तो ऐसी ही जगह से

निकले हैं। यहां हमारी जड़ें हैं। कोशिश करती हूं कि यहां अधिक से अधिक रहूं। इससे स्कूल आने–जाने में भी तो आसानी होती है। एक बार मेरे पति ने कहा था, वी.आर.एस. (स्वैच्छिक सेवा अवकाश) ले लूं। वो समझते थे कि मुझे यहां रहने में परेशानी होती है। इतने साल इतने मजे में गुजार दिए बच्चों के साथ। 2021 में सेवानिवृत होउंगी तो लगता है कितना कम समय है। मैं तो हर दिन को पूरा–पूरा जीना चाहती हूं। शिक्षक बनने का सौभाग्य सबको नहीं मिलता। पीढ़ियों से रिश्ता बनता है आपका। मेरे स्कूल से पढ़े कुछ बच्चे भी अब शिक्षक हैं, कोई सेना में काम कर रहे हैं। समय कम है, ज्यादा से ज्यादा काम करना है।''

रुद्रप्रयाग जिले में पुरुषों के अनुपात में महिलाओं की संख्या ज्यादा है। 2011 की जनगणना बताती है कि प्रति हजार में 120 महिलाएं ज्यादा हैं। लेकिन, यह भी पता चलता है कि महिलाएं शिक्षा में कहीं पीछे हैं। यह अंतर कैसे पाटा जा सकेगा?

"पुरुष नौकरी की वजह से ज्यादा पलायन करते हैं, इसलिए महिलाएं ज्यादा होंगी। शायद पूरे पहाड़ में ही ऐसा होगा। मुझे नहीं लगता यह लिंग अनुपात के हिसाब से सही आंकड़ा है। यह सच है कि पहाड़ का वजूद आज महिलाओं के श्रम पर टिका है। अर्थव्यवस्था ही नहीं संस्कृति और भाषा भी। मगर, यह गर्व की बात नहीं। मैं देखती हूं, महिलाएं सब कुछ करने और सहने के बावजूद यथोचित सम्मान नहीं पाती। तरह–तरह का उत्पीड़न सहती हैं। हां, मगर अगली पीढ़ी की महिलाओं में आपको साक्षरता दर सुधरी हुई जरूर मिलेगी। आप हमारे स्कूल में देख सकते हैं, यहां बच्चियां बराबर संख्या में हैं। आज गांवों की भी सभी बच्चियां स्कूलों में हैं। आगे उनका क्या होगा यह मैं नहीं जानती, लेकिन वे प्राथमिक शिक्षा तो पूरा करेंगी ही करेंगी।"

आपके बच्चे प्रगति कर रहे हैं, आप यह कैसे जान पाती हैं?

"मैंने बच्चों के तीन रीडिंग क्लब बनाये हैं। वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली क्लब, अब्दुल कलाम क्लब और रानी लक्ष्मीबाई क्लब। दो कहानियों के एक कविता का। बच्चे जब पढ़े हुए को अभिव्यक्त करते हैं तो मालूम पड़ जाता है

कौन शब्द पर है, कौन वाक्य पर और कौन पूरी कहानी बता दे रहा है। उसी तरह लिखने के भी चरण हैं। हम रीडिंग क्लब के माध्यम से केवल अवलोकन करते हैं। अपने समझने के लिए। उसी के आधार पर हम उनके लिए अलग–अलग रणनीतियां बनाते हैं। एक दूसरा तरीका है खुद बोलना या सुनाना और फिर अलग–अलग बच्चों से दोहराना।" वह जोड़ती हैं, "बच्चों को अपनी–अपनी पसंद के शब्द जुटाने के लिए दिए जाते हैं। फिर उनसे वाक्य बनवाए जाते हैं। यहां कहीं कहानी भी निकल आती है इन्हीं संदर्भों से, अलग से नहीं।"

प्रमिला जी का सपना गांव वालों के लिए लाइब्रेरी बनाने का भी था। लेकिन इस सपने के बीच में जगह की बाधा आ गयी। स्कूल की पुरानी बिल्डिंग अब काम की नहीं रह गयी है, जबकि पास में बने सी.आर.सी. कक्ष को भी स्कूल के काम में ले लिया जाता है। गांव के लोगों से उनकी घनिष्ठता का परिणाम इस मायने में देख सकते हैं कि 2 लाख 25 हजार का ग्राम सभा का बजट स्कूल की दीवार बनाने के लिए दे दिया। दीवार काफी मोटी और मजबूत बनी है। विधायक से अनुरोध करके उन्होंने एक अतिरिक्त कक्ष का निर्माण कराया है। कूड़े के निस्तारण के लिए यहां कोने पर एक बड़ा गड्डा खोदा गया है। वन विभाग से उन्होंने स्कूल के चारों ओर पौधारोपण का काम करवाया है। इनमें ज्यादातर चौड़ी पत्ती वाली प्रजातियां हैं। गांव से सेना के सेवानिवृत कैप्टेन स्कूल के लिए हर मौके पर उपलब्ध रहते हैं। चाहे वह प्रभातफेरी हो या बाल दिवस। वे समय से स्कूल पहुंचते हैं और पूरे समय बच्चों के बीच बने रहते हैं। समुदाय की एस.एम.सी. (विद्यालय प्रबन्धन समिति) में भागीदारी नियमित रूप से रहती है। इस बैठक में अभिभावकों को बच्चों की कॉपी दिखाई जाती हैं। किस बच्चे में क्या अच्छा है यह उसके अभिभावक को बताया जाता है। स्कूल के बच्चों के लिए प्रमिला मैडम जी ने टेबल और बेंच की व्यवस्था खुद के प्रयासों से करायी है। वे बच्चों के लिए ड्रेस देहरादून से खरीदती हैं। एक स्वेटर, 1 पैंट और 2 शर्ट की व्यवस्था की गयी है। लड़कियों के लिए टयूनिक भी है। जिस तरह का कपड़ा वे खरीदती हैं उसमें बजट से आगे भी जाना पड़ता है, जो उनकी

अपनी जेब से ही होता है। उनके पति ने स्कूल के लिए एक एल.सी.डी.टी.वी. दिया है, जिसमें बच्चे राइम्स व अन्य कार्यक्रम देखते व सुनते हैं। कला–कार्य में दिलचस्पी के चलते उन्हें सीमैट ने कला का मॉडयूल बनाने के काम में जोड़ा है। उनके स्कूल के प्रति लगाव और समर्पण का ही परिणाम है कि गांव में दो–दो प्राइवेट स्कूल होने के बावजूद गांव का एक भी बच्चा वहां नहीं जाता।

यहां हमारे लिए यह समझने में आसानी होती है कि शिक्षक का समर्पण किस तरह स्कूल को संसाधनों से परिपूर्ण कर सकता है। शिक्षक जब समुदाय के बीच और करीब रहते हैं तो उनकी वहां के समाज में स्वीकार्यता होती है। शिक्षक जब सभी बच्चों से बिना भेदभाव दोस्ती करते हैं तो कैसे बच्चों का आत्मविश्वास जागृत होता है। वे न सिर्फ स्कूल में बने रहना चाहते हैं बल्कि वहां हो रहे क्रियाकलापों का भी हिस्सा बनते चले जाते हैं। सबसे अहम बात यह कि शिक्षक अपने काम से किस तरह किसी समाज को पुर्नपरिभाषित करते हैं, उस जगह को नयी पहचान और नया आयाम देते हैं। उनके लिए यह दैनंदिन सृजन का काम है।

मैडम प्रमिला भंडारी जैसे शिक्षकों की वजह से रुद्रप्रयाग नई परिभाषा हासिल कर रहा है।

(प्रमिला भंडारी से हुई भास्कर उप्रेती व करन सिंह की बातचीत पर आधारित)